लेख

विश्व को एक सूत्र में पिरोने का पर्व है शिवरात्रि

आज हम 21वीं सदी के शैशवकाल व विज्ञान के युग में अनेक भौतिक सुखों का आनंद तो ले रहे हैं किंतु जिन आंतरिक सुखों की अंतरात्मा अनुभूति करना चाहती है वह उसे प्राप्त करवाने में सक्षम नहीं है। मानव जीवन में आज व्यक्तिगत खुशी, आनंद व उमंग के जन्म, सफलता व व्यवसायिक उन्नति आदि से संबंधित बहुत ही कम अवसर रह गए हैं जबकि सार्वजनिक, सामाजिक व संगठित रूप से खुशियों के आदान-प्रदान, स्नेह, सद्भावना को सुदृढ़ करने व अलौकिक आनंद से अभीभूत होने के अवसर तो नगण्य होते जा रहे हैं। इसी कारण मानव एकांकी परिवार, व्यवसायिक दायरे के भीतर सिमट कर तनाव, चिंता व जीर्ण-शीर्ण विचारों से जूझता जिंदगी के बोझिल सफर को काटने के लिए मजबूर है। उत्सव वास्तव में उसके जीवन में एक नई स्फूर्ति, जिज्ञासा, ताजगी, उमंग-उत्साह व अतीन्द्रिय सुखों की छटा बिखर ने के लिए प्रारंभ हुए थे तब उनमें श्रद्धा, प्रेम व सद्भावना थी, अब धीरे-धीरे श्रद्धा व प्रेम खत्म हो चुका है, अब रह गई है केवल परंपरा। अब उनकी लोकप्रियता, मौलिकता, सरोकारिता व उमंग उत्साह प्रायः खत्म होती जा रही है, इसका मूल कारण उन उत्सवों की वास्तविक आध्यात्मिक रश्मियों, रहस्यों व प्रतियों की अनभिज्ञता कहीं जा सकती है। शिवरात्रि के महानतम पर्व के साथ भी ऐसा हुआ लगता है।

पर्वतों की ऊंची चोटियों से लेकर सागर तक शायद ही कोई ऐसा स्थान होगा जहां परमात्मा शिव की मूर्ति की स्थापना न की गई हो। शायद ही कोई ऐसा धर्म ग्रंथ होगा जिसमें परमात्मा शिव की महिमा न की गई हो। परंतु परमात्मा शिव के असल परिचय, अवतरण व कर्तव्य अदि से मनुष्य अनभिज्ञ है। यदि मानव इन्हीं सच्चाईयों को जान ले कि परमात्मा शिव कौन, कब, कैसे प्रगट होते व क्या करते है तो सभी मनुष्य परमात्मा शिव पर अपना सब कुछ न्योछावर किए बिना नहीं रह सकते। इस शिवरात्रि पर्व से पूरे विश्व को एकता के सूत्र में पिरोया जा सकता है।

शिवरात्रि उस जमाने की यादगार है जबकि विश्व में चारों ओर अज्ञान अंधकार छाया हुआ था, भाई-भाई के खून का प्यासा था, स्त्रियों की लाज सुरक्षित नहीं थी। उस महाशिवरात्रि के समय मनुष्यता तड़प रही थी, रक्षक कोई नजर नहीं आता था, उस समय ब्रह्मलोक से एक अमर ज्योति का अवतरण हुआ था, उनके दिव्य प्रकाश से सारा जग-जगमगा उठा था। उस ज्योति का नाम 'परमात्मा शिव'। शिव का अर्थ है कल्याणकारी। सब मनुष्य के नाम देह पर आधारित होने के कारण विनाशी है और देह परिवर्तन के साथ ही उनके नाम भी बदल जाते हैं, परंतु परमात्मा अशरीरी है और जन्म मरण के चक्र में नहीं आते उनका नाम अविनाशी और दिव्य है, उनका रुप दिव्य ज्योतिबिंदु है इसलिए उनकी मूर्ति को ज्योतिर्लिंग अथवा शिवलिंग कहा जाता है। भारत के 12 मुख्य मंदिरों को इसी कारण ज्योतिर्लिंगम मठ भी कहते हैं।

भारतीय इतिहास, धार्मिक ग्रंथ और सारे देश के कोन-कोने में शिव की मूर्तियां मिलती है। उत्तर में अमरनाथ, हिमालय (गढवाल) में केदारनाथ, वाराणसी में विश्वनाथ, चित्रकूट में लिंगविजेंदर, प्रयाग में ब्रह्मोश्वर, उज्जैन में महाकालेश्वर, मध्यप्रदेश में दूसरा प्रसिद्ध मंदिर ओंकारनाथ, बिहार में बैजनाथ, गंगा-सागर के संगम पर संगमेश्वर, आसाम में भीमाशंकर, सौराष्ट्र में सोमनाथ और दक्षिण में रामेश्वर आदि। इस प्रकार जगह-जगह परमात्मा शिव की मान्यता का रूप ज्योतिरबिंदु शिव की याद दिलाते हैं। यह मंदिर देशवासियों में भावनात्मक एकता लाते और सारे भारत देश को शिव भूमि होने का संदेश देते हैं। न केवल भारत और हिंदू धर्म के लोग ही परमात्मा शिव को सम्मान देते हैं बल्कि

भारत के बाहर और दूसरे धर्म में विश्वास रखने वाले लोग भी शिव को बहुत मान देते रहें हैं। उदाहरण के तौर पर रोम में इसाई धर्म के कैथोलिक लोग गोल आकार वाले पत्थर को आज तक पूजते हैं। अरब में मक्का के तीर्थ स्थान पर मुस्लिम यात्री भी इसी प्रकार के पत्थर जिसे संग-ए-असवद या मक्केश्वर को चुमते हैं। जापान में रहने वाले बुद्ध धर्म के कई अनुयाई जब साधना के लिए बैठते हैं तो अपने सामने शिवलिंग की तरह का पत्थर 3 फुट की दूरी पर 3 फुट ऊंचे स्थान पर ध्यान लगाने के लिए रखते हैं। इसके अतिरिक्त मिस्र में ओसीरीस, बेबोलान में सीअन नाम से शिव की पूजा होती है जबकि सीरीया, यूनान स्पेन,जर्मनी, अमेरिका, मेक्सिको सुमात्रा एवं जावा द्विप आदि, विभिन्न स्थानों में भी परमात्मा शिव की ही यादगार देखने को मिलती है। यही नहीं बल्कि स्कॉटलैंड के प्रसिद्ध नगर ग्लासगो, तुर्कीस्थान ताशकद, वेस्ट-इंडीज, ग्याना, लंका, स्यामा, मारीशेस आदि में भी शिवलिंग की पूजा होती है। नेपाल में इसे पशुपतिनाथ तथा गुरु नानक देव जी द्वारा उसे एकोंकार कहा गया है। इन सबसे स्पष्ट है कि परमपिता शिव परमात्मा किसी एक धर्म के पूजनीय नहीं है बल्कि विश्व भर की सर्व आत्माओं के परम पूज्य पिता हैं।

परमात्मा शिव अजन्मा, अभोक्ता और ब्रह्मलोक वासी हैं। अजन्मा इसलिए कहा जाता है कि वह मानव व अन्य प्राणियों की तरह जन्म नहीं लेते जिससे कर्मबंधन बने। बल्कि धर्म ग्लानि के समय जब सारी मानव आत्माएं पांच विकारों के कारण दु:खी, अशांत, पतित व भ्रष्टाचारी बन जाती हैं, तो उन्हें पुन: पवित्र बनाने के लिए इस साकारी सृष्टि में एक साधारण वृद्ध तन में परकाया प्रवेश अथवा अवतरित होते हैं जिसे उनका दिव्य अलौकिक जन्म कहा जाता है। परमात्मा शिव के इसी दिव्य अवतरण की पावन स्मृति में ही शिवरात्रि अथवा शिवजयंती पर्व मनाया जाता है। यह केवल 10-12 घंटे की रात नहीं बल्कि यह अज्ञानता, पापाचार और बुराइयों की प्रतीक है। शिवरात्रि फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चौदवी अंधेरी रात में अमावस के पूर्व मनाई जाती है। फाल्गुन मास वर्ष के अंत का सूचक है और चौदवी रात घोर अंधकार की निशानी है।

शिवरात्रि के दिन भक्तगण शिवलिंग पर धतूरा, बेल, बेलपत्र इत्यादि चढाते, रात्रि जागरण व व्रत रखते हैं। धतूरा विकार का, बेर नफरत का, बेलपत्र बुराइयों व व्यसनों का प्रतीक है जिन्हें ही परमात्मा शिव पर चढाना चाहिए तथा आत्मा की ज्योति जगाने का जागरण व पवित्र रहने के लिए व्रत लेना चाहिए। शिवरात्रि सभी धर्मों का त्यौहार हैं तथा भारत वर्ष सभी धर्म के लोगों के लिए तीर्थ है। शिव स्मृति ही वास्तव में वह शुमंत्र अथवा तारक मंत्र है जिससे सर्व प्राप्तियां व सिद्धियां प्राप्त हो सकती है।

आज पुन: वह घडी है, वही दशा है, वही रात्रि है जब मानव समाज पतन की चरम सीमा तक पहुंच चुका है। ऐसे में बहुत ही महानतम घटना तथा संदेश सुनाते हर्ष हो रहा है कि अब कलयुग अंत व सतयुग आदि के संगमयुग पर स्वयंभू परमात्मा शिव मनुष्य आत्माओं की बुझी ज्योति को जगाने के लिए भारत में प्रजापिता ब्रह्मा के साकार तन में अवतरित हो चुके हैं तथा ईश्वरीय ज्ञान व राजयोग की शिक्षा देकर विकारों व बुराइयों से मुक्त कर दैवी स्वराज की स्थापना कर रहे हैं। इसलिए प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा समूचे विश्व के 130 देशों में अपने 4000 से भी अधिक राजयोग केन्द्रों के माध्यम से महाशिवरात्रि का पावन पर्व बहुत धूमधाम से मनाया जा रहा है। आईए हम सभी अपने परमपिता परमात्मा शिव के इस दिव्य जन्म पर विकारों, व्यसनों व आपसी मतभेदों को त्याग विश्व शान्ति, सद्भावना, नैतिक, आध्यात्मिक चरित्र उत्थान करने की प्रतिज्ञा के रूप में मनायें ताकि मानवता सुख शान्ति सम्पन्न बन सके।

शिव जयन्ती का आध्यात्मिक रहस्य (अव्यक्त महावाक्य)

* शिवजयन्ती महाज्योति बाप और ज्योतिबिन्दु बच्चों के मिलन का यादगार पर्व है। इस दिन भक्त शिव पर जल अथवा दूध चढ़ाते हैं और जल चढ़ाने समय बीच में ब्राह्मण होते हैं। यह प्रतिज्ञा की निशानी है। तो तुम्हारे पास जब भी कोई आते हैं तो उन्हों से पहले प्रतिज्ञा का जल लो अर्थात् प्रतिज्ञा कराओ कि हम आज से एक शिवबाबा के ही बनकर रहेंगे।

* शिवरात्रि पर्व बलि चढ़ने का भी यादगार है - यादगार रूप में तो स्थूल बलि चढ़ाते हैं लेकिन होना है मन, बुद्धि और सम्बन्ध से समर्पित। बलि चढ़ना अर्थात् महाबलवान बनना। आप बच्चों को अपने कमजोरियों की बलि चढ़ानी है। सबसे बड़ी कमजोरी देह-अभिमान की है। देह-अभिमान के वंश को समर्पित करना ही बलि चढ़ना है। तो अब ऐसी शिवरात्रि मनाओ।

* शिवरात्रि पर्व पर परमात्म प्यार में व्रत भी रखते हैं। यह व्रत खुशी की भी निशानी है। व्रत रखना अर्थात् प्यार में त्याग भावना। तो शिवरात्रि पर अपनी श्रेष्ठ वृत्ति द्वारा यह व्रत लो कि सदा कमजोर वृत्ति को मिटाकर शुभ और श्रेष्ठ वृत्ति धारण करेंगे। वृत्ति से कृति का कनेक्शन है। कोई भी अच्छी वा बुरी बात पहले वृत्ति में धारण होती है फिर वाणी और कर्म में आती है। तो श्रेष्ठ वृत्ति का व्रत धारण करना ही सच्ची शिवरात्रि मनाना है।

* शिव रात्रि के दिन भक्त आत्माओं के पास शिव बाप के बिन्दू रूप की विशेष स्मृति रहती है। शिव जयन्ती वा शिवरात्रि कोई साकार रूप का यादगार नहीं है लेकिन निराकार बाप ज्योति बिन्दू का यादगार है, जिसे वे शिवलिंग के रूप में पूजते हैं। तो आप सभी के दिल में भी बाप के बिन्दु रूप की स्मृति सदा रहे। बिन्दू अर्थात् बीजरूप स्थिति में स्थित हो बीज डालो तो अनेक आत्माओं में बाप की वा समय की पहचान का बीज पड़ जायेगा।

* शिवरात्रि का दिन भोलानाथ बाप का दिन है। भोलानाथ अर्थात् बिना हिसाब के अनगिनत देने वाला। नॉलेजफुल होते भी भोला है। वैसे तो हिसाब करने में एक-एक संकल्प का भी हिसाब जान सकते हैं लेकिन जानते हुए भी देने में भोलानाथ है इसलिए सिर्फ सच्ची दिल से उसे राज़ी कर लो तो सब भण्डारे 21 जन्मों के लिए भरपूर कर देगा।

* जैसे शिवरात्रि के दिन भक्त लोग अपने भक्ति की मस्ती में मस्त हो जाते हैं। ऐसे आप बच्चे ''पा लिया'' इसी खुशी में सदा गाते-नाचते उमंग-उत्साह से यह यादगार मनाओ। आप अभी इस ब्राह्मण जीवन में बाप के साथ सर्व आत्माओं को सुख, शान्ति, खुशी और शक्ति का सहयोग दो तब दोनों की साथ-साथ पूजा होगी।

* शिवरात्रि का अर्थ है - अंधकार मिटाकर प्रकाश देने वाली रात्रि। शिव रात्रि मनाना अर्थात् ज्ञान सूर्य का प्रगट होना। तो आप बच्चे भी मास्टर ज्ञान सूर्य बन विश्व से अंधकार को मिटाकर रोशनी देने का कर्तव्य करो। अंधकार मिटाने वाली आत्माओं के पास अंधकार रह नहीं सकता। अगर किसी भी विकार का अंश है तो उसे अंधकार कहेंगे, रोशनी नहीं। रोशनी अर्थात् सम्पूर्ण पवित्रता।

* शिवजयन्ती पर आप बच्चे प्रतिज्ञा भी करते और झण्डा भी लहराते हो। प्रतिज्ञा का अर्थ है कि जान चली जाए लेकिन प्रतिज्ञा न जाए। कुछ भी त्याग करना पड़े, कुछ भी सुनना पड़े लेकिन प्रतिज्ञा न जाए। वचन अर्थात् वचन। तो ऐसे मन से प्रतिज्ञा करना अर्थात् मन को मनमनाभव बनाना। साथ-साथ हर आत्मा के दिल पर बाप की प्रत्यक्षता का झण्डा लहराओ – यही सच्ची-सच्ची शिवरात्रि मनाओ।